|| अर्हम् ||
आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)
दूरभाष : 1565–224600,224900
ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

काम, क्रोध, लोभ है नरक में जाने के द्वार – युवाचार्य महाश्रमण

–अंकित सेठिया (मीडिया सहसंयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 22 फरवरी : युवाचार्य महाश्रमण ने प्रतिदिन के प्रवचन में गीता एवं उत्तराध्ययन का तुलनात्मक विवेचन करते हुए कहा कि गीता के अनुसार काम, क्रोध, लोभ नरक के द्वार हैं। ये आत्मा के गुणों का घात करने वाले हैं। जिस व्यक्ति में काम, क्रोध, लोभ की तीव्रता होती है वह आत्मा के मूल रुप से दूर हट जाता है। इन तीनों तत्वों को जैन दर्शन में मोहनीय कर्म की शाखाएं माना है। काम, क्रोध और लोभ की वजह से उत्पन्न हुई तीव्र हिंसा और आसक्ति नरक में जाने हेतु बनती है।

युवाचार्यप्रवर ने विवाह प्रणाली को अति कामुक्ता पर अंकुश लगाने वाला बताते हुए कहा कि विवाह प्रणाली के कारण काम उच्छृंखल नहीं बनता है। भारतीय संस्कृति में इस परम्परा को पाणिग्रहण माना जाता है। जिसका अर्थ होता है स्थाई जीवन साथी को प्राप्त करना। परन्तु वर्तमान में यह नहीं चल रहा है। तलाक की समस्या बढ़ती जा रही है। पति–पत्नि एक दूसरे को सहन नहीं कर रहे हैं। सहनशक्ति के विकास से इस समस्या पर काबू पाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि श्रावकों में तीव्र भोगासक्ति नहीं होनी चाहिए और विवेक का लोप करने वाले क्रोध से भी बचना चाहिए। गुस्सा शारीरिक और मानसिक दोनों दृष्टि से नुकसान करने वाला होता है। लोभ सबका नाश करने वाला होता है।

जैन विद्या कार्यशाला का आयोजन

तेरापंथ युवक परिषद् के द्वारा 20 फरवरी से आयोजित जैन विद्या कार्यशाला में मुनि पीयूष कुमार ने आदर्श की खोज विषय पर एवं मुनि अर्हत् कुमार ने आराधना किसकी करें पर अपना प्रवचन किया। रात्रि 8 से 9 बजे तक आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में चलने वाली इस कार्यशाला में 16 वर्ष से 61 वर्ष तक के लोगों को जैन दर्शन के विभिन्न विषयों पर विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अनेकांतवाद पर मुनि अभिजीत कुमार ने प्रशिक्षण प्रदान किया। प्रत्येक विषय पर प्रशिक्षण के बाद संभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान भी वक्ताओं के द्वारा किया जाता है।

अंकित सेठिया
मीडिया संयोजक/सहसंयोजक